Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

महाकवि बाणभट्ट विरचित कादम्बरी में पर्यावरणीय अवधारणा

अमित त्रिपाठी
शोधच्छात्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी, उ0प्र0

Article Info

Accepted : 05 Nov 2024
Published : 25 Nov 2024

Publication Issue :
November-December -2024
Volume 7, Issue 6

Page Number : 24-26

शोधसारांश - जब हम अपने चारों ओर दृष्टिपात करते हैं तो स्वयं को एक अदृश्य शक्ति से आच्छादित पाते हैं जिसको हम पर्यावरण के रूप में जानते है। मानव जाति का आधार यही वातावरण है जिसके बिना मानव के जीवन की कल्पना करना व्यर्थ है। लेकिन मानव की स्वार्थ लोलुपता और अन्धाधुन्ध प्राकृतिक दोहन के कारण वर्तमान समय पर्यावरण में असन्तुलता उत्पन्न हो गयी जो पर्यावरण प्रदूषण रूपी दानव के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हो गया है। अब आवश्यकता है पुन: सम्पूर्ण विश्व को प्राचीन वैदिक परम्पराओं की ओर लौटने की जिससे हमारे मन में प्रकृति के प्रति आदर और प्रेम बढ़ सके हमारे लिए वृक्ष पुन: हमारे बन्धु-बान्धव के रूप में प्रतीत हो सकें। मानव के अन्दर प्रकृति प्रेम को जाग्रत करने के लिए विभिन्न संस्कृत कथाओं की रचना हुई जिसमें महाकवि बाणभट्ट विरचित कादम्बरी-कथा प्रमुख है। जिसमें प्रकृति अध्येता के सम्मुख नर्तकी की भाँति अठखेलियाँ करती हुई से दिखती है और पर्यावरण के नैसर्गिक सौन्दर्य को अभिव्यक्त करती है तथा पर्यावरण संरक्षण उपदेश करती हुई-सी प्रतीत होती है।

मुख्य शब्द- पर्यावरण, कादम्बरी, महाकवि बाणभट्ट, प्रदूषण, बन्धु-बान्धव, मानव स्वार्थ, लोलुपता, अन्धाधुन्ध, प्राकृतिक दोहन।

हम जिस परिवेश में निवास करते हैं वह चारों तरफ से प्रकृति रूपी एक लौकिक सत्ता से आच्छादित है। जिसका प्रत्यक्ष दर्शन हम नदी, पहाड, पेड-पौधों, समुद्र, सूर्य, चन्द्रमा इत्यादि के रूप रूप में करते हैं।

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है- 'परि + आवरण' जिसका अर्थ है चारों ओर से घिरा हुआ । जो हमको चारों ओर से घेरता है जिसकी ओर हम बलात् ही आकृष्ट होते हैं। जिससे हमें मातृतुल्य स्नेह की प्राप्ति होती है और पितृतुल्य दिशा-निर्देश प्राप्त होता है। उस जीवनदायिनी शक्ति का नाम ही पर्यावरण है। प्रसिद्ध पर्यावरणविद् लुई थामस ने अपनी पुस्तक -The Lives of A cell में धरती को एक जीवित सेल के रूप में व्याख्या किया है। पर्यावरणीय ज्ञान

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

कोश(1975) के अनुसार "पर्यावरण उन सब परिस्थितियों और प्रभावों का कुल योग है जो जीवनधारियों के जीवन और विकास को प्रभावित करते हैं। साधारण शब्दों में जीवित प्राणियों के अस्तित्त्व, जीवन और पुनरुत्पादन को प्रभावित करने वाला सबसे प्रमुख कारण पर्यावरण ही है।" पर्यावरण को परिभाषित करते हुए हर्सकोविट्स ने लिखा है–" पर्यावरण सम्पूर्ण बाह्य परिस्थितियों और उनका जीवनधारियों पर पड़ने वाला प्रभाव है जो जैव जगत के विभिन्न जीवन–विकास चक्र का नियामक है।[1]

अनुकूलता ही सम्पूर्ण मानव सभ्यता के जीवन का आधार है तथा इसमें प्रतिकूलता ही मानव के विनाश का कारण है। इसी कारण से हमारे प्राचीन त्रिकालज्ञ मनीषियों ने प्रकृति में विद्यमान दैवीय गुणों का प्रकाशन अपने विभिन्न सूक्तों में मन्त्रों के माध्यम से किया चाहे वो नासदीय सूक्त हो या अग्निसूक्त, पृथिवी सूक्त हो या विश्वामित्र नदी संवाद। इन सभी सूक्तों के माध्यम से उन्होंने ने प्रकृति की उपासना करने का उपदेश दिया। जिससे प्रकृति हमारे अनुकूल रहे और हम स्वच्छ वातावरण में निवास करते हुए निरोगी होकर जीवन जी सके।[2] हमारे ऋषि–मुनियों ने इसीलिए पृथिवी को माता के संज्ञा दी जिससे प्रकृति के साथ हमारा सम्बन्ध मातृ–पुत्र हो और हम प्रकृति को क्षति न पहुचाएं–

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः पर्जन्याः पिता स उ नः पिपर्तुः" । 12/1/12 अथर्ववेद

हमारे ऋषि–मुनियों को प्रकृति की शक्ति का सम्यक् ज्ञान था। ब्रह्मवेत्ता महर्षि जानते थे कि प्रकृति का अनुकूलन सम्पूर्ण मानव–जाति के लिए वरदान था तथा प्रकृति का प्रतिकूलन सम्पूर्ण मानव–जाति के लिए विनाश का कारण बन सकता है इसीलिए उन्होंने प्रकृति–पूजा पर विशेष बल दिया। उन्होंने पेड़–पौधों की पूजा और न काटने पर बल दिया।[3] उन्होंने नदी, अग्नि वायु, पृथ्वी सबकी पूजा की और उनमें दैवीय तत्त्वों को स्वीकार किया। जिन्हें अधोलिखित वैदिक मन्त्रों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है–

"एना वयं पयसा पिन्वमाना अनुयोनिं देवकृतं चरन्तीः।

न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति।। 3/33/4 विश्वामित्र-नदी संवाद"

"यामश्विनावमिमातां विष्णुयस्यां विचक्रमे
इन्द्रो यां चक्र आत्मनेऽनमित्रां शचीपतिः
सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः।।–12/1/1 पृथिवीसूक्त–अथर्ववेद"
"स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
तपस्या न: स्वस्तये ।। 1/1/9 ऋग्वेद"

वेदों के पश्चात् परवर्ती लौकिक संस्कृत के अन्तर्गत आने वाले गद्य एवं पद्य साहित्य में भी प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों, स्वरूपों तथा इसके विभिन्न पक्षों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। जिसमें महाकवि बाणभट्ट विरिचित गद्य काव्य सर्वप्रमुख है।[4]

महाकवि बाण के काव्यों में प्रकृति चित्रण– बाण के काव्यों में अन्त: प्रकृति और बाह्य प्रकृत दोनों का समानरूप से चित्रण हुआ है। जन्म–जन्मान्तर के संस्करों का, मानव की मूक प्रणय वेदना के मर्म का, तपस्या की कठोर साधना का और राजसी जीवन की विलासिता एवं भव्यता का, नायिकाओं के तीव्र रागात्मक मनोभावों एवं कन्योचित लज्जालुता का अद्भुत वर्णन कादम्बरी में प्रस्तुत किया गया है।[5] बाण द्वारा चित्रित कादम्बरी की प्रणयलीला बाहरी चाकचिक्य से उत्पन्न रुप छटा पर अनुरक्ति मात्र नहीं है, अपितु वह दो सहृदयों के अन्तस्थल को परस्पर बांधने वाला अनेक जन्मों तक अपनी अभिव्यक्ति देने वाला आनन्दोत्पादक विकार है। अन्त: प्रकृति की भांति बाह्य प्रकृति के वर्णनों में भी बाण ने अपनी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति तथा विशाल ज्ञान–कोष को प्रस्फुटित किया है। उनके वर्णनों में कहीं विन्ध्याटवी का विकट रोमाञ्चकारी दृश्य है तो कहीं हिमालय का परमशोभनीय दृश्य , कहीं वन्य तरुलता आदि का मुग्धकारी चित्रण है तो कहीं अच्छोद सरोवर और पम्पा सरोवर का हृदयाह्लादक सचित्र वर्णन, कहीं मन को शान्ति प्रदान करने वाले आश्रमिक जीवन की सुन्दर छटा है तो कहीं प्रात: सायं एवं रात्रि की सुषमा का रेखाङ्कन। पम्पा सरोवर के वर्णन करते हुए महाकवि बाण लिखते है कि पम्पासरोवर मानो कोई दूसरा महासागर हो अथवा वराहावतारी भगवान विष्णु द्वारा उद्धृत पृथ्वी–मण्डल का जल–पूर्ण आकाश–

"आश्रमस्य नातिदूरे जलनिधि पान कुपित वरुणोत्साहितेन अगस्त्यरात्तदाश्रमसमीपवर्ती अपर इव वेधसा महाजल निधिरुत्पाधित: प्रलयकाल विघाटिताष्टदिग्भागसन्धिसन्धं गगनतलमिव भुवि निपतितम् आदिवराहसमुद्धृत धरामण्डलस्थानमिव सलिल पूरितम् ॥[6]

बाह्य प्रकृति के चित्रण में बाणभट्ट जैसे विशाल नेत्र किसी संस्कृत कवि के नही हैं।वन में उगने वाला ऐसा कौन–सा पादप तथा पुष्प है ऐसी कौन सी लता है; पशुओं, पक्षियों, कीटों तथा छोटे से लेकर बड़े तक वन्य प्राणियों की ऐसी कौन–सी जाति है जिसे बाणभट्ट की कविदृष्टि ने न देख लिया हो–

मदकलकुररकुलदश्यमानमरिचपल्लवा,करिकलभकरमृदिततमालकिसलयामोदिनी,पथिकजनरचितलवङ्गपल्लवसंस्तरै: अतिकठोरनारिकेलकेतकीकरीरबकुलपरिगतप्रान्तै: ताम्बूललतावनध्दपूगषण्डमण्डितैर्वनलक्ष्मीवासभवनैरिव विराजिता लतामण्डपै: ।[7]

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. अर्थववेद – डा. तुलसीराम शर्मा
2. ऋक् सुक्त संग्रह– डा हरिदत्त शास्त्री
3. ईशादि नव उपनिषद् – गीता प्रेस गोरखपुर
4. कादम्बरी कथा मुखम् – रामसिया मिश्र
5. पर्यावरण एवं पर्यावरणीय संरक्षण विधि की रूप रेखा –डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
6. कादम्बरी –कथामुखम् पम्पासरोवर वर्णन, रामसिया मिश्र, पृष्ठसंख्या – 131
7. कादम्बरी– विन्ध्याटवी वर्णन, रामसिया मिश्र, पृष्ठ संख्या– 115